श्रमण २००१ ०१ (फोल्डर नं. ०२५०४३)

सम्पादक - डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल

सम्पादकीय

अनुक्रमणिका

अनेकान्तवाद-मूल्यपरक शिक्षा के एक यन्त्र के रूप में – डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय ---------- १

जैनतत्त्व चिन्तन की वैज्ञानिकता – डॉ. कमलेश कुमार जैन ---------- ११

वराङ्गचरित-एक महाकाव्य – डॉ. जितेन्द्रकुमार सिंह ---------- १७

अपभ्रंश साहित्य में पर्यावरण चेतना – डॉ. प्रेमचन्द जैन ----------२१

पर्यावरण चिन्तन-जैन वाङ्मय के सन्दर्भ में – डॉ. संगीता महेता ---------- ३०

जालोर मण्डल में जैन धर्म एवं उसके अध्ययन सम्बन्धी स्रोत – डॉ. सोहनकृष्ण पुरोहित --------- ३९

सावड़ी के प्रतिमालेख में उल्लेखित हेमतिलकसूरि कौन – डॉ. शिवप्रसाद ---------- ५७

राष्ट्रोत्थान में प्रागैतिहासिककालीन जैन महिलाओं का योगदान – डॉ. पुष्पलता जैन ---------- ६१

रसशास्त्र के विकास में जैनचार्यों का योगदान – कु. अंजू श्रिवास्तव ---------- ६८

धम्मिलकुमारचरित्र – श्री भंवरलाल नाहटा ---------- ७५

दीघनिकाय में व्यक्त सामाजिक परिवेश – डॉ. दीनानाथ शर्मा ---------- ९१

ગુજરાતની કેટલીક પ્રાચીન જૈન મૂર્તિઓ – શ્રી સારાભાઇ મણિલાલ નવાબ ---------- ૯૫

સિદ્ધસારસ્વતાચાર્ય અમરચંદ્ર મુનિ – શ્રી કનૈયાલાલ ભાઈશંકર દવે ---------- ૯૭

The influence of Svayambhudeva's Paumachariu… ---------- 103

The Jaina Way of Life – Dulichand Jain---------- 122

The Veda and Indian Philosophy – Dr. Kireet Joshi ---------- 130

Jaina Dutakavya – Dr. A K Singh ---------- 141

विद्यापीठ के प्रांगण में ---------- १५४

जैन जगत् ---------- १५९

साहित्य सत्कार ---------- १६१

निबन्ध प्रतियोगिता ---------- १६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org